देखौ सुनौ कबहू ना के तू वह कैसे स्वरूप और कैसे सुभायन,
तीरथ हीरथ हारी पड़यौ, रसखान बतायौ ना लोग लुगायन,
देख्यौ दूरयौ वह कुंज कुटीर में बैठौ पलोटत राधिका पायन,
देख्यौ दूरयौ वह कुंज कुटीर में बैठौ पलोटत राधिका पायन।

सखी प्रिया–हॉ उद्धव जी अबहू आप माने कि नाय, नाय तौ अपनी ऑखन नै फिर बन्द कर लियो।

उद्धवजी–

वसुधा की सुधा जग की उपमा, मुनि मानस मंजू अराधिका के,
सुख कन्द सदा द्वन्द्व हरे यों सिद्धन–सिद्ध समाधिका के,
कवि लाल गोपाल की जीवन मूरी ब्रजवासिन कारज साधिका के,
यदुनन्दन आनन्द चन्दन सौं, पद पंकज धोवत राधिका के,
यदुनन्दन आनन्द चन्दन सौं पद पंकज धोवत राधिका के।
अब अति चकित बंत मन मेरौ,
मैं आयौ निर्गुण उपदेशन पर भयौ सगुण कौ चेरौ।

हे गोपियो तुम्हारे श्रीकृष्ण प्रेम के आगे यह ब्रहमज्ञानी वृहस्पति शिष्य उद्धव नतमस्तक है के तुमकू साष्टांग प्रणाम करै है। और आज मैं मान गयौ

गोपी प्रेम की ध्वजा,
जिन गोपाल किये वश अपने,
उर धर श्याम भुजा।
धन्य–धन्य ये लोग भजत हरी कौ जे ऐसे,
और कोउ बिन रस प्रेम पावत हैं कैसे,
मेरे वा लघु ज्ञान कौ और मैं मध हुई व्याधि,
अब जानौ ब्रज प्रेम की लहत ना आधी आत।
व्रथा श्रम कर मरयौ, ब्रथा श्रम कर मरयौ,
धन्य ये गोपिका, धन्य ब्रजनागरी।

और गोपियों अब तौ बस एक ही धारणा है।

गीत–प्रेमी के प्रेम पथ पर मन हो गया दीवाना।